संस्कृत भाषा एवं उसके विविध रूप

डॉ. सुभद्रा जोशी
विभागाध्यक्ष, शिक्षा विभाग
राजस्थान शिक्षक प्रशिक्षण विद्यापीठ, जयपुर

‘‘ ध्वन्यात्मक शब्दों के द्वारा विचारों का प्रकटीकरण ही भाषा है।‘‘

‘‘भाषा सार्थक ध्वनि प्रतीकों की वह व्यवस्था है, जिसके द्वारा इसके प्रयोक्ता या श्रोता आपस में विचारों का आदान प्रदान करते है।

समस्त संसार में पाये जाने वाले सभी जड़ और चेतन प्राणियों के भाव अभिव्यक्ति के सभी साधनों- को सामान्य रूप से भाषा कह दिया जाता है, किन्तु भाषा विज्ञान में जिस भाषा को ग्रहण किया जाता है जैसे संस्कृत भाषा वह सांकेतिक आदि मानवीय व्यक्त वाणी है।

‘‘ बृहदारण्यक उपनिषद में भी यह कहा गया है।

‘‘ वाग्वै सम्राट् परमं ब्रह्म‘‘ अर्थात :- वाणी ही संसार का सम्राट् है परंब्रह्म है। भाषा शब्द संस्कृत की ‘‘भाषा‘‘ धातु से निष्पन्न हुआ है। जिसका अर्थ ‘‘ भाष व्यक्तायां वाचि‘‘

‘‘ भाष्यते व्यक्तवाग्रूपेण अभिव्यज्यते इति ‘‘ भाषा‘‘ अर्थात व्यक्त वाणी के रूप में जिसकी अभिव्यक्ति की जाती है, उसे भाषा कहते है।

‘‘ भाषा‘‘ धातु से भाषा की निष्पत्ति हुई।

भाष का अर्थ :- ‘‘प्रकाश करना‘‘

विचारो का प्रकाशन करना भाषा से ही सांसारिक - व्यवहार सम्भव हैं‘‘ आचार्य दण्डी के मतानुसार काव्यादर्श में - कहा गया है ‘‘वाचामेव प्रसादेन लोकयात्रा प्रवर्तते‘‘

अर्थात् :- वाणी के माध्यम से ही लोक व्यवहार की सिद्धि होती है। भाषा मनुष्यों के विचारों की अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम है। इसके प्रमुख रूप से दो अंग होते है।

(1) मौखिक (2) लिखित

(1) मौखिक भाषा में विचारों की अभिव्यक्ति मौखिक होती

(2) लिखित भाषा में ध्वनि संकेतों को प्रतीक रूप में लिखकर व्यक्त किया जाता है।

(1) डॉ. भोलानाथ तिवारी के अनुसार :- ''भाषा मानव उच्चारण अववणों से उच्चारित याद्धच्छिक ध्वनि प्रतीकों की वह संरचनात्मक व्यवस्था है, जिसके द्वारा समाज विशेष के लोग आपस में विचार विनिमय करते हैं। लेखक, कवि या वक्ता के रूप में अपने अनुभवों एवं भावों आदि को व्यक्त करते है तथा अपने वैयक्तिक और सामाजिक व्यक्तित्व, विशिष्टता तथा अस्मिता के सम्बन्ध में जाने अनजाने जानकारी देते हैं।''

भाषा की विशेषताएं :-

(1) भाषा एक व्यवस्था है। यह अनुकरण द्वारा सीखी जाती है।

(2) यह अर्जित सम्पति है ।

(3) यह परिवर्तनशील है ।

(4) भाषा सभ्यता के साथ विकास लाती है।

(5) भाषा प्रतीकात्मक है।

(6) भाषा समाज में विचार विनिमय का साधन है।

(7) भाषा व्यावहारिक दक्षता है।

(8) इसका प्रारम्भ मौखिक है, इसका लिखित रूप सभ्यता और संस्कृति की देन है।

(9) किन्ही भी दो भाषाओं की संरचना पूर्णतः समान नहीं होती।

(10) भाषा स्थूल से सूक्ष्म की ओर विकसित होती है।

(11) भाषा संश्लेषण से विश्लेषण की और बढ़ती है।

(12) प्रत्येक भाषा का अपना एक मानक रूप होता है।

(13) भाषा के अनेक रूप होते है जैसे :- व्यक्ति बोली समाज भाषा, मानक भाषा, साहित्यिक भाषा, मौखिक भाषा, लिखित भाषा।

भाषा के विविध रूप :-

(1) मूल भाषा :- (2) मातृ भाषा (3) प्रादेशिक भाषा (4) राजभाषा (5) राष्ट्रभाषा (6) अन्तर्राष्ट्रीय भाषा (7) सांस्कृतिक भाषा।

संस्कृत एवं अन्य भारतीय भाषाएं

संस्कृत भाषा का स्थान समस्त भाषाओं में देव वाणी व सुरभारती के नाम से सर्वोत्तम है। संस्कृत भाषा का परिवार भी जिस प्रकार मनुष्य अपने परिवार के साथ रहते है। वैसे ही भाषाओं को भी चार परिवारों में विभक्त किया गया है।

भाषा परिवार

भारोपीय परिवार | द्राविड़ी परिवार | आस्ट्रो एशियाई परिवार | तिब्बत वर्मा परिवार

''संस्कृत भाषा का महत्व एवं उसका ''समृद्ध साहित्य''

संस्कृत हमारी देववाणी है। मानव जीवन के लक्ष्य को प्राप्त करने के चार पुरूषार्थ माने गये हैं ।

चर्तुवर्ग: फल : प्राप्ति सुखादल्पधियामपि।
काव्यादेव यत्सतेन ततस्वरूपेमनिरूप्यते।।

हमारे प्राचीन विद्वान, ग्रन्थकार, ऋषिमुनीयों के द्वारा जो ग्रन्थ लिखे गये हैं वे सब संस्कृत में ही है। इस भाषा का शब्द सामर्थ्य अद्भुत है।

भू.पू. प्रधानमन्त्री पं. जवाहरलाल नेहरू के शब्दों में '' यदि मुझसे पूछा जाय कि भारत की सबसे विशाल सम्पत्ति क्या है और उत्तराधिकार के रूप में उसे सर्वोत्तम कौनसी वस्तु प्राप्त हुई है- तो मैं निः संकोच उत्तर दूंगा, कि वह सम्पति संस्कृत भाषा और साहित्य एवं उसके भीतर जमा सारी पूंजी ही है।

(1) संस्कृत प्राचीनतम भाषा :- संस्कृत भारत की ही नही विश्व की प्राचीनतम भाषा है। जन साधारण की धारणाऐं निर्मूल है कि संस्कृत भाषा पूजापाठ तक ही सीमित है। अपितु रामायण, महाभारत काल में भी जन साधारण की भाषा रही है। संस्कृत भाषा में अद्वितीय लिखित साहित्य दो भागों में मिलता है। (1) वैदिक (2) लौकिक

''डॉ. राजेन्द्र प्रसाद '' के द्वारा संस्कृत रिसर्च दरभंगा में 21 नवम्बर 1951 को अपने भाषण के द्वारा कहा गया कि '' संस्कृत वाङमय के लिए अमूल्य निधि है''। उसकी प्राचीनता उसकी व्यापकता सौन्दर्यता और मधुरता सभी इस प्रकार की है, जिनसे मानव जाति का आज तक की संस्कृति का सारा इतिहास ज्योतिर्मय हो उठता है।

याज्ञवल्क्य की मनु स्मृति में कहा गया है कि

''एतद्देष प्रसूतस्य सकाशादग्रजन्मन :।

स्वं एवं चरित्रं शिक्षेरन पृथिव्यां सर्वमानवा :।

''विश्व के प्रत्येक भू भाग से ज्ञान के जिज्ञासु इस देश में आएंगे और यहां के प्रतिभाशाली तत्ववेत्ताओं द्वारा नीति की शिक्षा ग्रहण करेंगें। हमारी प्राचीन सामाजिक व्यवस्था की मुख्य रूप से विशेषताएं है। जैसे (1) वर्णाश्रम (2) संयुक्त परिवार (3) कर्मकाण्ड (4) रीतिरिवाज (5) धार्मिक उत्सव वर्ण आश्रम व्यवस्था में अपने अपने व्यवसाय की दृष्टि से मानव का विभाजन होता था।

जन्मना जायते शूद्र: संस्काराद्द्विज उच्चयते।

जन्म से तो सभी शूद्र उत्पन्न होते है लेकिन द्विजत्व की प्राप्ति संस्कारो से मिलती है।

संस्कृत विषये महापुरूषाणां विचारा :

(1) स्वामी विवेकानन्द महाभागानुसारेण :- संस्कृत ध्वनिषु, शब्दभण्डारे च जीवनशक्ते जागरणस्य क्षमता अस्ति भारते क्षेत्रीय भाषाभिः सह संस्कृतमपि अनिवार्यरूपेण अध्यापनीयम्।

(2) श्री अरविन्द महोदयानाम् :- संस्कृतस्य ज्ञानं समस्त हिन्दूनाम् अत्यावश्यकमस्ति। संस्कृतस्य अध्ययन अध्यापनाय एका विशिष्टा व्यवस्था अपेक्षिता वर्तते।

(3) पं. जवाहर लाल नेहरू :- ''यदि मां कोऽपि पृच्छति भारतस्य निकटे सर्व विशिष्टं बहुमूल्यं वस्तु किमस्तीति अथवा भारतस्य सर्वाधिका, सुन्दरां सम्पति का इति। तर्हि अहं, निस्सन्देहं वदिष्यामि संस्कृत भाषा, साहित्यं तद् ज्ञानं च इति।

(4) डा. सर्वपल्लि राधाकृष्णन् मतानुसारेण :- संस्कृतम् एका ताद्वषी भाषा या अस्मान् विचार परम्परया, संस्कृत्या सह योजयति। अद्यावधि अस्माकं देशवासिषु एकतायाः सौभ्रातृत्वस्य च भावनां संचारयन्तौ अस्ति।